हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 16 - 22 November 2025

दहली दिल्ली

RERA No: P-IND-25-5906
Emerald
PARADISE COVE
Where every inch of Land
Holds a Promise
TOMORROW.
Kids Play Area
Amphi theatre
Water Body
Badminton Court
Green Maze
Green Mounds
Gazebo
Plot Sizes starting from
4000 -10000 sq. ft
SITE: Village Panod, Indore (M.P.)
PHONE: +91-76106 76106

अनुक्रमणिका

लाल किले के धमाके से मिली चेतावनी	रोहन गिरी	04
ध्वस्त हो आतंकवाद का इकोसिस्टम	अमित त्यागी	06
गुप्त सूचना में नागरिक सहयोग	आशीष कुमार 'अंशु'	09
समाज में शत्रु बोध आवश्यक	डॉ. उदय भान सिंह	11
धमाके की खुलती कलई	अभिषेक सूर्येश	14
पहले से स्पष्ट था सम्मिलित परिणाम	अवधेश कुमार	16
अवैध घुसपैठ की पोल खोल	विप्लव विकास	18
राष्ट्र चेतना का गीत वंदेमातरम्	कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल	21
ममदानी की जीत का अर्थ	डॉ. अभिषेक श्रीवास्तव	22
भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	धीप्रज्ञ द्विवेदी	24
तीन तलाक के दर्द को बयां करती फिल्म	संकलन	27
संघ कार्य को समर्पित भाऊराव देवरस	विजय कुमार	28
समाचार	-	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

षडयंत्र

लाल किले के धमाके से मिली चेतावनी

लाल किले के बाहर हुआ यह धमाका केवल एक हमला नहीं बल्कि एक प्रश्न है कि क्या हम सुरक्षित हैं? भारत को अब रिएक्शन नेशन नहीं बल्कि प्रिवेंशन नेशन बनना होगा। हमारी एजेंसियां सक्षम हैं, हमारे सैनिक निडर हैं और यदि हमारे नागरिक सजग रहें तो कोई भी आतंकी नेटवर्क हमारे सामने टिक नहीं सकता।

रोहन गिरी

10 नवम्बर 2025 की शाम दिल्ली के लाल किले के बाहर कार धमाका देश की चेतना को झकझोर देने वाला था। सात दशकों के गणराज्य भारत में लाल किला केवल एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं है, यह हमारी स्वाधीनता, अस्मिता और लोकतंत्र का प्रतीक है। जब इसी स्थल के द्वार पर एक कार धमाके में 12 लोगों की मौत का समाचार मिला तो लगा कि यह केवल मानव-विस्फोट नहीं है बल्कि एक राष्ट्रीय संदेश है कि शांति के समय में भी शत्रु शांति नहीं चाहता।

यह केवल एक आतंकी घटना नहीं थी बल्कि उस बदलती प्रवृत्ति की झलक भी थी, जिसमें आतंकवाद ने अपना रूप, तरीका और लक्ष्य तीनों बदल दिए हैं। पहले आतंक का चेहरा स्पष्ट था जिनमें सीमापार के कैंप, हथियारों की खेप और प्रत्यक्ष हमले। आज उसका स्वरूप कहीं अधिक पेचीदा और गुप्त हो गया है। दिल्ली ब्लास्ट ने यह दिखाया कि आतंक अब न केवल सीमा पर बल्कि विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और डिजिटल नेटवर्कों के बीच भी आकार ले रहा है।

इसी कड़ी में जब जांच एजेंसियों ने कार्रवाई शुरू की तो परतें खुलती चली गईं। गिरफ्तार किए गए प्रमुख आरोपी डॉ. मोहम्मद उमर नबी, डॉ. मुझम्मिल शकील, डॉ. अदील अहमद राथर और डॉ. शाहीन शाहिद सभी उच्च शिक्षित लोग निकले, जिनकी पृष्ठभूमि मेडिकल और अकादमिक संस्थानों से जुड़ी हैं। लखनऊ की डॉ. शाहीन शाहिद जैश-ए-मोहम्मद की भारत में महिला शाखा 'जमातुल मोमिनात' की प्रमुख थी। पूछताछ में उसने स्वीकार किया कि वह मसूद अजहर की बहन सादिया अजहर के सम्पर्क में थी और 2 वर्षों से विस्फोटक जुटाकर महिलाओं को आतंकी अभियानों के लिए कट्टरपंथी व संगठित कर रही थी। यह व्हाइट कॉलर टेररिज्म का नया चेहरा है, जिसमें पढ़े-लिखे प्रोफेशनल्स आतंक के औजार बनते हैं और शिक्षा संस्थान अनजाने में वैचारिक अड्डे बन जाते हैं। इस छद्म आतंकवाद में हथियारों की जगह शिक्षा, पेशा और सामाजिक प्रतिष्ठा को ढाल बनाया जाता है। ऑपरेशन 'सिंदूर' के समय जिस तरह तथाकथित पत्रकारों और एक्टिविस्ट्स ने आतंकियों और शत्रु देश की भाषा बोली थी, वैसा ही पैटर्न अब लाल किले के पास हुए फिदायीन हमले में भी दिखा। यह नया चेहरा है आतंक का जहां नैरेटिव हथियार से ज्यादा घातक सिद्ध हो रहा है।

राष्ट्रीय जांच एजेंसी (छखअ) ने इस मामले को णअझअ के अंतर्गत अपने हाथ में लिया है। अब तक 2,900 किलो से अधिक विस्फोटक सामग्री, अमोनियम नाइट्रेट और डिटोनेटर बरामद हुए हैं। कई

गिरफ्तारियां जम्मू-कश्मीर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में हुईं। यह बताता है कि यह नेटवर्क केवल दिल्ली तक सीमित नहीं था बल्कि देश के कई हिस्सों को अस्थिर करने की तैयारी में था। घटना के बाद सरकार की प्रतिक्रिया भी उतनी ही तीव्र रही। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 12 नवम्बर को प्रेस कॉन्फ्रेंस में साफ कहा कि यह केवल एक आतंकी घटना नहीं बल्कि संगठित आतंकी हमला है। देश की सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हैं और इसका पूरा जवाब देंगी। यह वक्तव्य उस विश्वास का प्रतीक है कि भारत अब प्रतिक्रिया-आधारित नहीं बल्कि प्रोएक्टिव सुरक्षा नीति की दिशा में आगे बढ़ चुका है।

भारत आज उन कुछ देशों में है जो निरंतर आतंकवाद की चुनौती के बीच भी लोकतंत्र और सामाजिक संतुलन बनाए हुए हैं, लेकिन यह संतुलन केवल शब्दों से नहीं बल्कि सतत जागरूकता और सामूहिक जिम्मेदारी से चलता है। दिल्ली ब्लास्ट ने हमें यह सोचने पर मजबूर किया है कि सुरक्षा का अर्थ अब केवल सीमा पर सतर्कता नहीं बल्कि समाज के भीतर फैले सूक्ष्म खतरों की पहचान भी है। दिल्ली ब्लास्ट हमें यह भी बताता है कि आतंकवादी अब स्लो-बर्न स्ट्रेटेजी पर काम कर रहे हैं यानी समाज के भीतर धीरे-धीरे घुसपैठ, संस्थानों में वैचारिक विष और फिर छोटे-छोटे झटकों से बड़े हमले की तैयारी। इसलिए यह केवल पुलिस या खुफिया एजेंसी का विषय नहीं बल्कि राष्ट्र-सुरक्षा का सामाजिक दायित्व बन चुका है।किसी भी देश की सुरक्षा केवल सीमा पर लगी चौकी या हथियारों से नहीं होती बल्कि उन लाखों नागरिकों से होती है जो अपने आस-पास संदिग्ध गतिविधि को पहचानने की क्षमता रखते हैं। यह विजिलेंट सिटिजनशिप का समय है, जहां हर नागरिक एक सुरक्षा-कड़ी है। जब नागरिक सक्रिय होंगे तभी सुरक्षा तंत्र भी प्रभावी रह सकेगा। इसी बीच यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत की खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों ने पिछले एक दशक में अभूतपूर्व सुधार किए हैं। ड्रोन-सर्विलांस, सैटेलाइट इमेजिंग, साइबर मॉनिटरिंग और सोशल मीडिया विश्लेषण के जरिए अब हर सम्भावित खतरे की परत खोली जा रही है, परंतु हर तकनीक तब तक कारगर नहीं जब तक इंटेलिजेंस-कोऑर्डिनेशन मजबूत न हो।

दिल्ली ब्लास्ट के बाद सामने आई प्रारम्भिक जांच रिपोर्ट स्पष्ट संकेत देती है कि आतंकियों का नेटवर्क कई राज्यों में फैला था और इसका लिंक पहले हुए कश्मीर-अरेस्ट से जुड़ता है। इसका अर्थ यह है कि हमें रियल टाइम डेटा शेयरिंग और काउंटर इंटेलिजेंस ग्रिड को और ज्यादा मजबूती देनी होगी। इसलिए आवश्यक है कि सभी स्तरों पर कदम उठाए जाएं। ***

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

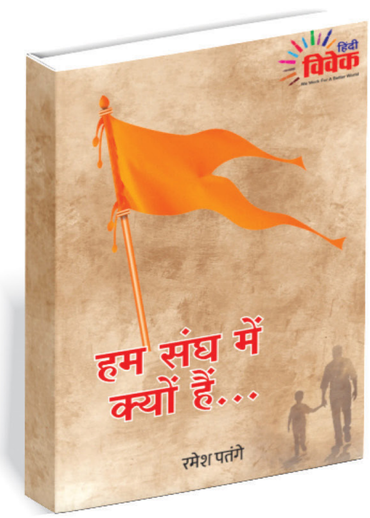

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

ध्वस्त हो आतंकवाद का इकोसिस्टम

प्रहार

अमित त्यागी

दिल्ली में लालकिले के पास कार में विस्फोट एक बड़ा सबक है। इसमें विस्फोट करने वाले अनपढ़ नहीं हैं, बेरोजगार नहीं हैं, विकास से दूर लोग नहीं हैं। इसमें शिक्षित, रोजगार पाए हुए और विकास की मुख्यधारा में शामिल लोग शामिल दिख रहे हैं। इस घटना में डॉक्टर और प्रोफेसर जैसे बौद्धिक शामिल हैं। मेडिकल या इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुके या करते हुए आतंकी बनना पसंद करने वालों की मानसिकता को समझने के संदर्भ में एक बात तो स्पष्ट है कि ये लोग समाज के प्रताड़ित लोग नहीं है। ये कमजोर या दबे-कुचले नहीं हैं। आयु में युवा भी नहीं है। किसी के बहकावे या लालच के कारण इस राह पर जाने वाली थियरी इन पर लागू नहीं होती है। ये लोग चाहते तो एक बेहतर और सुंदर जीवन जी सकते थे। समाज में प्रतिष्ठा होने के कारण ये अपने वर्ग में प्रेरणास्रोत रहे होंगे। तो फिर क्यों इन लोगों ने आतंक का मार्ग चुना? जितना महत्वपूर्ण यह प्रश्न है, उतना ही आवश्यक है आतंकवादियों के समर्थन करने वाले इकोसिस्टम को समझना। इस इकोसिस्टम द्वारा अधिकतर कहा जाता है कि आतंक का कोई मजहब नहीं होता है। यह कहकर यह इकोसिस्टम बड़ी समस्या को हल्का करने का प्रयास करता है। हमें अब अपनी समझ में स्पष्टता लानी होगी। मजहब की आड़ में आतंकवाद को नकारा नहीं जा सकता है। धार्मिक शिक्षाओं के आधार पर जेहाद करना, गजवा ए हिंद को जमीन पर उतारने का सपना देखना, जैसे अनेक तथ्य हैं जो मजहबी शिक्षा से जुड़े हैं।

दुनिया में जितने भी आतंकवादी संगठन हैं वह मजहबी मान्यताओं से लैस होकर जेहाद कर रहे हैं। इनमें पढ़े-लिखे लोग शामिल हैं, ओसामा भी इंजीनियर था। दिल्ली ब्लास्ट में शामिल लोग भी उच्च शिक्षित लोग हैं। न ओसामा आर्थिक रूप से अक्षम था, न ही दिल्ली ब्लास्ट के गुनहगार अशिक्षित लोग हैं। पिछले एक दशक में भारत में सीमा पार से आने वाले आतंकवाद पर रोक लगी है। पाकिस्तान के द्वारा भारत के अंदर की जाने वाली घुसपैठ सफल न होने के कारण अब भारत के अंदर रहने वाले इकोसिस्टम का मोड्यूल एक्टिव हुआ है। पहले जो लोग स्लीपर सेल की तरह बौद्धिक आतंकवाद को छद्म रूप से सहयोग करते थे, वह अब खुल कर सामने आ गए हैं।

लालकिले के पास कार विस्फोट में शामिल दिखने वाले चेहरे का केवल एक पक्ष है। इसमें कई अन्य अदृश्य सहयोगी शामिल हैं। एक बार फिर घटना के तार पाकिस्तान से जुड़ते दिख रहे हैं। आईएसआई लगातार लश्कर ए तैयबा एवं इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविन्स जैसे समूहों को एकजुट करने का प्रयास कर रही है। सीमा पर युद्ध में मिली हताशा के बाद आतंकी संगठनों

लालकिले के पास कार विस्फोट को दिल्ली तक सीमित करके देखने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए कड़ी सतर्कता एवं सुरक्षा की आवश्यकता है। एक गहन छानबीन अभियान चलाने की आवश्यकता है। देश के अंदर विरोध के नाम पर देश को कमजोर करने वाले लोगों को चिह्नित करना होगा। उनकी जड़ों पर प्रहार करना होगा।

को एकजुट करने का उनका उद्देश्य स्पष्ट है, भारत में आतंकी गतिविधियों को पुनर्जीवित करना। जम्मू-कश्मीर में अशांति फैलाना। जम्मू-कश्मीर के कुछ असंतुष्ट लोगों के द्वारा भारत में अपने मोड्यूल को मजबूत और स्थापित करना। लालकिले की घटना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि खतरा बाहर से कम अब अंदर से अधिक है। हमारी आंतरिक कमजोरियों का लाभ उठाकर यह इकोसिस्टम विभाजन का प्रयास कर रहा है। यह लड़ाई केवल सुरक्षा बलों, पुलिस, इंटेलिजेंस तक सीमित नहीं है। इसके लिए हर नागरिक को अपना योगदान देना होगा। 'राष्ट्रप्रथम' को धर्म से आगे रखने वाले लोग समाधान दे सकते हैं। कट्टरपंथी विचारधारा छोटे स्तर पर केवल मदरसों तक सीमित नहीं हैं, कट्टरपंथ अब विश्वविद्यालयों, अस्पतालों जैसे प्रमुख स्थानों तक अपनी गहरी पैठ बना चुका है। सेकुलर शब्द और संविधान की आड़ लेकर यह इकोसिस्टम कट्टरपंथ का जेहादी मोड्यूल चला रहा है। इस मोड्यूल को ऐसे समझिए। एक वर्ग घटना करता है। दूसरा, इसे भटके हुए लोगों का समूह बताता है। तीसरा, आतंक का कोई मजहब नहीं होता है, कहकर विषय से ध्यान भटकाने का प्रयास करता है। चौथा, सेकुलर शब्द की आड़ में पीड़ितों के लिए केंडल मार्च निकालता है। पांचवा, अमन और शांति के लिए व्याख्यान शुरू कर देता है। छठा, सरकार की गुप्तचर एजेंसियों की असफलता बताकर सरकार के असंतुष्टों को खाद पानी देता है। सातवां, मीडिया को सबका जिम्मेदार बताना शुरू कर देता है। आठवां, इन हमलों को कहीं हो रहे चुनाव से जोड़कर दिखाता है। नवां, आरएसएस को कोसने लगता है। इसी तरह जोड़कर देखें तो दस, ग्यारह, बारह, यह सूची लम्बी होती जाएगी। विशेष बात यह है कि कोई भी मजहबी कट्टरता की मूल कारण पर बात नहीं करता। ऐसे लोगों को फिलीस्तीन की चिंता रहती है, किंतु भारत के बहुसंख्यक इन्हें यहूदी जैसे दिखते हैं। बांग्लादेश का सत्ता पलट इन्हें अपने लिए लाभकारी लगता है, किंतु भारत का लोकतंत्र खतरे में दिखता है। इस इकोसिस्टम के समर्थक नेपाल की तरह आगजनी और हिंसा रूपी अराजकता भारत में चाहते रहे हैं।

किसान आंदोलन की आड़ में इस इकोसिस्टम ने बहुत खेल किया। 26 जनवरी 2021 को किसानों के समर्थन के नाम पर यह लोग लालकिले तक घुस गए थे। संसद इनका अगला निशाना था। पूर्व में भारत की संसद पर आतंकवादियों ने हमला किया था। इस इकोसिस्टम से जुड़े लोगों ने अफजल गुरु के समर्थन में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। रात में उच्चतम न्यायालय में सुनवाई हुई थी। भारत की संसद पर हमला करना इस बात का सबूत है कि ऐसा करने वाले और उनका समर्थन करने वालों का भारत के लोकतंत्र के प्रति सम्मान भाव नहीं है। 26 जनवरी 21 को लालकिला निशाने पर था। इस बार भी लालकिले के आसपास विस्फोट संयोग है या प्रयोग है? इस पर अभी स्पष्ट नहीं कह सकते हैं। ***

आगामी विशेषांक

हिंदी विवेक
We Work For Better World

मूल्य ₹50/-

विशेषांक में समाहित विषय

- राष्ट्रीय एकात्मता पुरुष: सरदार वल्लभभाई पटेल।
- नरेंद्र मोदी की दृष्टि से सरदार पटेल।
- सोमनाथ मंदिर और वल्लभभाई पटेल।
- कश्मीर: सरदार पटेल की दृष्टि में।
- सरदार पटेल के चुनिंदा भाषण।
- मुस्लिम प्रश्न और वल्लभभाई पटेल।
- राजकोट सत्याग्रह और सरदार।
- सरदार पटेल का पारिवारिक जीवन।
- राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शिता।
- सरदार देश के पहले प्रधानमंत्री बनते तो....
- स्टेचू ऑफ़ यूनिटी का निर्माण एवं उद्देश्य।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और वल्लभभाई पटेल।
- संस्थानों का स्वतंत्र भारत में विलीनीकरण।
- भारत-पाकिस्तान विभाजन जिन्ना और सरदार पटेल।
- सरदार पटेल : भारतीय एवं वैश्विक मान्यवारों के विचार।
- सरदार पटेल व्यक्तित्व और अनसुने किस्से।

तथा अन्य...

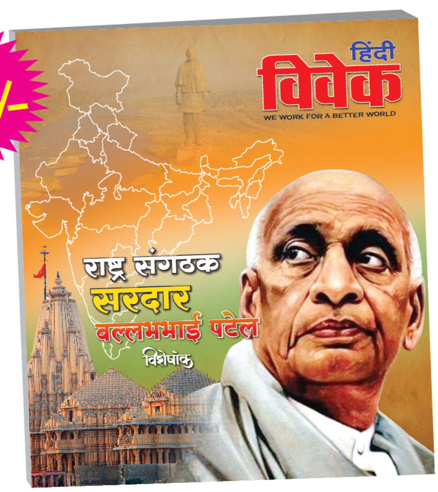

जल्द ही अपनी प्रतियां बुक करें

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

पितांबरी®
होमकेअर डिवीजन
चिकनाहट मिटाए,
बर्तन चमकाए!
Antibacterial
PITAMBARI®
DISHWASH BAR
With Lemongrass
Kam Gale, Chale Zyada!
with lemongrass
ANTIBACTERIAL
• नॉनस्टिक, स्टील के बर्तन और क्रॉकरी को साफ करता है।
• चिकनाहट और तेल के जिद्दी दाग निकालता है।
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 6366932555, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699.
Toll Free: 18001031299. CIN: U52291MH1989PTC051314.

गुप्त सूचना में नागरिक सहयोग

जनभागीदारी

'ये पब्लिक है सब जानती है'।... कहते हैं सतर्क नागरिकों की दृष्टि में आतंकी अवश्य आते हैं और उन्हें संदिग्धों की पहचान भी होती है, किंतु पुलिस के दुर्व्यवहार व सुरक्षा के अभाव से वे सूचना देने आगे नहीं आते हैं। सर्तक नागरिकों से मजबूत सम्बंध, संवाद, सर्म्पक, समन्वय रखने से पुलिस व सुरक्षा एजेंसियों को लाभ मिल सकता है।

भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, जहां कानून का शासन सर्वोपरि है, वहां पुलिस व्यवस्था समाज की रीढ़ मानी जाती है। संविधान के अनुच्छेद 246 के अंतर्गत पुलिस राज्यों का विषय है, लेकिन केंद्र भी सहायता प्रदान करता है। फिर भी 75 वर्षों के स्वतंत्रता के बाद भी पुलिसिंग की दशा चिंताजनक बनी हुई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार 2024 में अपराध दर में वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें महिलाओं के विरुद्ध अपराध और साइबर धोखाधड़ी प्रमुख हैं। पुलिस सुधार लम्बे समय से लम्बित है, जो न केवल कानून-व्यवस्था को प्रभावित करता है बल्कि जनता का विश्वास भी कमजोर करता है। 2025 में जब देश 'विकसित भारत' की ओर अग्रसर है, पुलिस को आधुनिक, पारदर्शी और मानवाधिकार अनुकूल बनाना आवश्यक है। दिल्ली में कार में हुए बम विस्फोट मामले में हमने पुलिसिंग की वर्तमान स्थिति और इंटेलिजेंस की विफलता को देखा।

भारत में पुलिसिंग की वर्तमान स्थिति और चुनौतियां

भारतीय पुलिस व्यवस्था ब्रिटिश काल की पुलिस एक्ट 1861 पर आधारित है, जो औपनिवेशिक शासन के लिए डिजाइन की गई थी। स्वतंत्रता के बाद इसे लोकतांत्रिक बनाने के प्रयास हुए, लेकिन मूल ढांचा वही है। पुलिस पर भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार और राजनीतिक हस्तक्षेप के आरोप लगते रहते हैं, जिससे जनता का विश्वास घटता है। एक सर्वे के अनुसार 60% से अधिक नागरिक पुलिस से सम्पर्क करने से हिचकिचाते हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

इंटेलिजेंस विफलताओं और आतंकी घटनाओं का सबक

भारत ने कई आतंकी घटनाओं का सामना किया है, जहां इंटेलिजेंस विफलताएं प्रमुख रही हैं। 26/11 मुंबई हमलों में खुफिया एजेंसियों को पाकिस्तान से आने वाले संदिग्धों की जानकारी थी, लेकिन समन्वय की कमी से 166 लोग मारे गए। पुलवामा हमले (2019) में भी स्थानीय स्तर पर संदिग्ध गतिविधियों की अनदेखी हुई। हाल ही में दिल्ली रेड फोर्ट ब्लास्ट में ढेर सारा विस्फोटक पकड़ा, जो बड़े विनाश की योजना के लिए इकट्ठी की गई होगी। ये घटनाएं बताती हैं कि इंटेलिजेंस का 70% हिस्सा मानवीय स्रोतों पर निर्भर है, जिसमें नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

2025 में जब नए आपराधिक कानून लागू हो चुके हैं तो पुलिस को डिजिटल फोरेंसिक और अख आधारित निगरानी पर जोर देना पड़ रहा है, लेकिन चुनौती यह है कि आतंकी संगठन जैसे खड्खड या लश्कर-ए-तैयबा अब सोशल मीडिया और लोकल नेटवर्क के जरिए रेकी करते हैं। यहां नागरिकों को 'आंखें और कान' बनाना आवश्यक है।

ये पब्लिक है सब जानती है

सतर्क नागरिकों की दृष्टि में आतंकी अवश्य आते हैं, लेकिन पुलिस के दुर्व्यवहार के डर से वे आगे नहीं आते। यदि एटीएस, आईबी या स्थानीय पुलिस गुप्त सूचना के लिए सुरक्षित विकल्प दें तो हमले रोके जा सकते हैं। 2025 की 'स्टेटस ऑफ पोलिसिंग इन इंडिया रिपोर्ट' में कहा गया है कि कम्युनिटी पोलिसिंग को मजबूत करने से अपराध दर 15% कम हो सकती है। नागरिकों को जागरूक करना ही समाधान है। संदिग्ध गतिविधियों की पहचान के लिए 8 प्रमुख संकेत हैं, जो अमेरिकी होमलैंड सिक्योरिटी और भारतीय एजेंसियों द्वारा मान्य हैं।

1. रेकी (सर्विलांस): कोई व्यक्ति बार-बार एक ही जगह (मंदिर, बाजार, रेलवे स्टेशन) पर फोटो खींचता, नोट्स लेता या वीडियो बनाता है। उदाहरण: मुंबई ट्रेन ब्लास्ट से पहले आतंकियों ने रूट मॅपिंग की।

2. संदिग्ध खरीदारी: रसायन, उर्वरक, मोबाइल सिम या हथियार जैसे सामान बिना वैध कारण के खरीदना। ग्रामीण क्षेत्रों में फसल के अलावा यूरिया खरीदना संदिग्ध की श्रेणी में आएगा।

नागरिक कैसे गुप्त सूचना पहुंचाएं: सुरक्षित विकल्प

पुलिस के दुर्व्यव्यहार का डर है, लेकिन अब डिजिटल युग में गुमनाम तरीके उपलब्ध हैं।

आशीष कुमार 'अंशु'

राष्ट्रीय आपातकालीन नम्बर 112: कॉल करें, नाम न बताएं। ऐप "Emergency Response Support System' डाउनलोड करें, जो लोकेशन शेयर करता है बिना आईडी के।

साइबर क्राइम पोर्टल: https://cybercrime.gov.in/na "Report Anonymously' फॉर्म भरें। आतंकी ऑनलाइन गतिविधि (सोशल मीडिया रेडिकलायजेशन) रिपोर्ट करें। 2024 में 50,000+ टिप्स आए।

सीबीआई टिप लाइन: https://cbi.gov.in/submit-tip na गुमनाम टिप सबमिट। भ्रष्टाचार या आतंकी फंडिंग रिपोर्ट करें।

एटीएस हेल्पलाइन: राज्यवार उपलब्ध। महाराष्ट्र ATS: 022-23809090 (गुमनाम कॉल)। गुजरात ATS: 079-23251900। वे व्हाट्सएप टिप्स भी लेते हैं।

खुफिया ब्यूरो (IB) **पोर्टल**: mha.gov.in na "Citizen Feedback' सेक्शन या ईमेल intel@ib.gov.in (गुमनाम)। लेकिन विस्तृत डिटेल दें।

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) **मणस ऐप**: ड्रग्स या आतंकी फंडिंग टिप्स के लिए, पूरी गोपनीयता।

संचार साझी पोर्टल: https://sancharsaathi.gov.in/ पर संदिग्ध कॉल्स रिपोर्ट, जो जासूसी से जुड़ी हो सकती हैं।

इनमें आपका नाम, लोकेशन या फोन नम्बर न दें। ऐप्स GPS ट्रैक करते हैं, लेकिन आईडी छिपी रहती है। 1930 हेल्पलाइन साइबर-आतंकी टिप्स के लिए है। यदि डर लगे तो पुलिस सुधार पर काम करने वाली एनजीओ से सम्पर्क करें।

2025 के नए कानूनों से FIR ऑनलाइन दर्ज होती है और गुमनाम टिप्स को प्राथमिकता मिलती है। तेलंगाना में IPF के साथ पायलट प्रोजेक्ट चला, जहां 20% टिप्स से गिरफ्तारियां हुईं।

नागरिकों को प्रशिक्षण दें: स्कूलों में 'सुरक्षा जागरूकता' वर्कशॉप।

सुधारों की दिशा: आधुनिक पुलिसिंग की ओर पुलिस सुधारों में MPF स्कीम का विस्तार हो रहा है, जिसमें CCTV, बॉडी कैमरा और फोरेंसिक लैब्स पर खर्च। 2025 में एआई टूल्स जैसे प्रेडक्टिव पोलिसिंग लागू हो रही है, लेकिन 90% कांस्टेबलों का प्रशिक्षण जो सबसे अधिक आवश्यक है, सरकारों को उस पर ध्यान देना चाहिए अर्थात मॉडल पुलिस एक्ट 2006 को लागू करें।

***

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

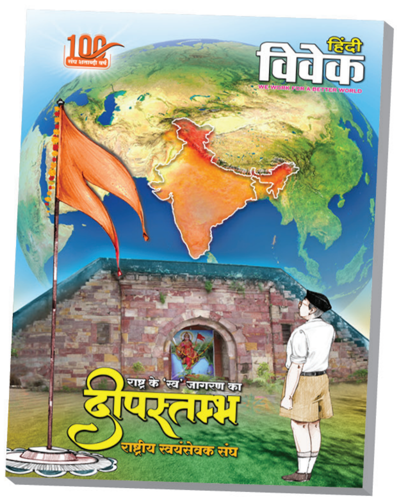

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

समाज में शत्रु बोध आवश्यक

एक संगठित, जागरूक, एकताबद्ध, आत्मविश्वासी समाज ही अपने अस्तित्व, संस्कृति और भविष्य की रक्षा कर सकता है। यही शत्रुबोध का वास्तविक सार है। इसके साथ-साथ स्वयं को ही पहचानने व आत्म गौरव का भाव आदि भी शत्रु बोध की चेतना में सम्मिलित हैं।

जागरूकता

डॉ. उदय भान सिंह

किसी भी समाज की सुरक्षा और स्थिरता उसके शत्रुबोध अर्थात वास्तविक संकट एवं विध्वंसकारी तत्वों की पहचान पर निर्भर करती है। भारतीय समाज, विशेषतः हिंदू समाज, अपनी उदार, सहनशील, समन्वयी प्रवृत्ति के कारण प्रायः आंतरिक कलह में उलझा रहा है। इस प्रकार के कलह समान्यतः जाति, भाषा, क्षेत्र, उपासना-पद्धति के संघर्ष, राजनीतिक दलों के आपसी वैमनस्य, व्यक्तिगत हित व अति महत्वाकांक्षा आदि रहे हैं। इसी विखंडन का लाभ उठाकर कट्टर, हिंसक, राष्ट्र व समाज-विरोधी ताकतें समय-समय पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में आक्रमण करती रही हैं। इसलिए आज अत्यंत आवश्यक है कि भारतीय समाज 'शत्रु' को व्यक्ति नहीं बल्कि विचारधारा, हिंसक मानसिकता, विध्वंसकारी नेटवर्क के रूप में इन्हें पहचानें।

शत्रु बोध का अभाव क्यों?

अति-सहनशीलता और क्षमा- भारतीय सनातन संस्कृति ने दुनिया को 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना दी अर्थात सबको ही अपना मानने का भाव रखा, परंतु यह देखा गया है कि भारतीय समाज की इसी उदारता ने समाज को आक्रामकता के विरुद्ध निष्क्रिय बना दिया। जिसके अनेक ऐतिहासिक दुष्परिणाम देखने को मिले हैं।

जातिवाद का ऐतिहासिक बोझ- प्रायः जन-जन में राष्ट्रीय एकता के स्थान पर छोटे-छोटे समूह अपनी पहचान को बड़े राष्ट्रीय हित से ऊपर रख देते हैं।

भाषाई एवं प्रांतीय विभाजन- भाषा और क्षेत्र को लेकर अधिकांश संघर्ष होते रहते हैं, जो होते तो मूलतः प्रशासनिक विषय हैं, परंतु कई बार वह समाजिक तनाव में बदल जाते हैं।

राजनीतिक ध्रुवीकरण- राजनीतिक पार्टियां समाज को अपनी-अपनी लाइनों पर बांटकर उसे कमजोर करती हैं, जबकि वास्तविक सुरक्षा का विषय कहीं पीछे छूट जाता है।

इतिहास का अपर्याप्त अध्ययन- भारत में हुए विनाशकारी आक्रमणों, विभाजनों, आंतरिक गुटबाजी का इतिहास जनता तक सही रूप से नहीं पहुंच पाया, जिसके कारण शत्रुबोध कमजोर रहा।

- शत्रु कौन? एक व्यावहारिक समझ समय रहते भारतीय या सनातन अर्थात हिंदू संदर्भ में 'शत्रु' को निम्न प्रकार से समझना उचित होगा-
- वह जो भारतीय समाज की एकता को तोड़े।
- वह जो हिंसा, आतंक, कट्टरता और विध्वंस को साधन बनाए।
- वह जो संविधान, कानून और सामाजिक सौहार्द के विरुद्ध सक्रिय हो।
- वह जो समाज के भीतर छुपकर अस्थिरता पैदा करे।
- वह जो लोकमत, शिक्षा, मीडिया, संस्कृति में घुसपैठ करके भ्रम और विभाजन फैलाए, इत्यादि।
- इस प्रकार 'शत्रु' किसी धर्म-समुदाय नहीं बल्कि कट्टरपंथी व हिंसक विचारधाराएं

जैसे- आतंकवाद, जिहादी चरमपंथ, धार्मिक उन्माद, ड्रग/माफिया नेटवर्क, विदेशी तंत्र के फंडिंग-नेटवर्क व राष्ट्र विरोधी टूलकिट गैंग हैं।

हिंसक चरम पंथ को शत्रु मानने के कारण

ऐसी विचारधारा या ताकतें समाज की मूल संरचना को नष्ट करने का लक्ष्य रखती है। ऐसे तत्व संगठित, अनुशासित, गुप्त नेटवर्क में कार्य करते हैं। ये समाज के भीतर की कमजोरियों यथा जाति, भाषा, राजनीति आदि का लाभ उठाते हैं। इन्हें अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिला हुआ होता है और इनको नैरेटिव बनाना आता है। ये सामान्य नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं और राज्य को निशाना बनाते हैं।

भारतीय संदर्भ में शत्रु बोध क्यों आवश्यक है?

हम देख रहे हैं कि विश्वभर में जिहादी आतंकवाद-उग्रवाद के नेटवर्क तेजी से फैल रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों ने कट्टरता को बढ़ाने की क्षमता कई गुना बढ़ा दी है। 'जनसांख्यिकीय युद्ध', 'साइकोलॉजिकल वारफेयर', 'नैरेटिव युद्ध' जैसी रणनीतियों को अपनाया जा रहा है। भारत की विविधता को विभाजन का साधन बनाकर यहां अव्यवस्था उत्पन्न करने की कोशिशें प्रायः होती रहती हैं। ऐसे में यदि समाज संगठित न हो तो किसी भी देश की सुरक्षा केवल शासन तंत्र ही नहीं कर सकता। अतः समाज को सचेत व संगठित रहने की आवश्यकता है। वास्तव में संगठित समाज ही स्वयं रक्षा का मजबूत आधार है।

भारतीय समाज की कुछ कमजोरियां

विखंडित सामाजिक चेतना यथा जाति, गोत्र, सम्प्रदाय के छोटे-छोटे खांचों में बने रहना। संगठन का अभाव जैसे एक साथ खड़े होने की कम आदत। प्रतिकार-चेतना का अभाव। उदाहरण के लिए आक्रमण के पश्चात ही जागरूक होने की प्रवृत्ति। सूचना-युद्ध में पिछड़ापन जैसे फेक-नैरेटिव का समय पर प्रत्युत्तर न देना। सांस्कृतिक हीनभावना के कारण पश्चिमी सोच के प्रभाव से अपनी परम्परा व संस्कृति को कमतर समझ लेना

समाधान

✻ उक्त समस्याओं के संदर्भ में समाधानात्मक कुछ इस प्रकार प्रस्तावित किए जा सकते हैं-

✻ बच्चों से लेकर वयस्कों तक शिक्षा में राष्ट्रीय सुरक्षा का भाव जागृत किया जाए, इतिहास और नागरिक कर्तव्यों की समझ हो।

✻ हिंसक चरमपंथ के वैचारिक अधिष्ठान व उद्देश्य-लक्ष्य को समझना, उसे अपराध और विचारधारात्मक समस्या के रूप में समझाना।

समाजिक एकता व संगठन के भाव का जागरण

✻ जाति, भाषा, प्रांत जैसे झगड़ों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय-सभ्यतागत पहचान को प्राथमिकता।

✻ पंथ-मत-सम्प्रदाय के भेद को संस्कृति की विविधता मानकर, विभाजन का आधार न बनने देना।

सूचना-युद्ध में सक्रियता

✻ सोशल मीडिया पर सत्य, तर्क और प्रमाण आधारित सामग्री का प्रसार।

✻ फेक नैरेटिव के विरुद्ध तुरंत प्रतिकार होना चाहिए अन्यथा जनता भ्रमित होती है।

भारतीय, सनातन, हिंदू समाज को आज सबसे अधिक आवश्यकता है शत्रुबोध की सूक्ष्म, बुद्धिपूर्ण और जिम्मेदार समझ होना। वास्तव में समाज का शत्रु हिंसक वैचारिक चरमपंथ, विदेशी फंडेड नेटवर्क, विभाजनकारी नैरेटिव और संगठित आतंकवाद व अपराध हैं।

समाजिक संगठन अनिवार्य

मोहल्ला स्तर पर छोटे-छोटे जागरूक समूह बनाए जाने चाहिए। सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और सद्भाव के लिए सतत चेतना कार्यक्रम आयोजित हों। आपदा-सेवा, जन-जागरण जैसी गतिविधियां समाज को मजबूत बनाती हैं। अतः इस दिशा में सक्रियता से कार्य करने की आवश्यकता है।

यदि समाज संगठित रहता है तो सुपरिणाम प्राप्त होते हैं। जैसे- हिंसक चरमपंथ को छुपने की जगह नहीं मिलती। समाज-विरोधी तत्वों की मानसिक और संगठनात्मक रीढ़ टूटती है। राजनीतिक दलों को भी समाज की एकता के सामने झुकना पड़ता है। देश की सुरक्षा केवल सरकार नहीं बल्कि सामाजिक समूह का सामर्थ्य सुनिश्चित करता है। समरस, संतुलित, सुरक्षित भारत का निर्माण होता है।

***

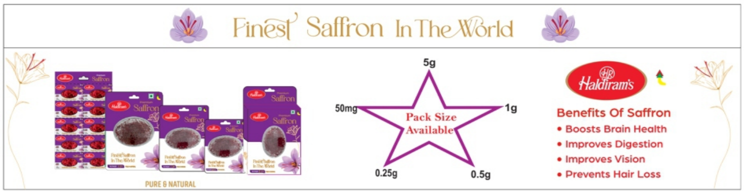

Haldiram's

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT ™

केसर तिलक

★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर

अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।

तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*

ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*

केसर तिलक कैसे तैयार करें

कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।

*Data on file

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

दृष्टि

धमाके की खुलती कलई

सरकार को सर्वप्रथम आतंक की पौध तैयार करने वाली नर्सरी (मदरसे) और आतंकी गतिविधियों के केंद्र बनते भारतीय मुस्लिम विश्वविद्यालयों के युवाओं को वैश्विक जिहाद और उसके लिए प्रेरित विदेशी फंड पर सरकार को पैनी दृष्टि बनाए रखने की आवश्यकता है।

दिल्ली कार धमाके की जांच का काम आगे बढ़ रहा है और जैश ए मोहम्मद के आतंकियों के षड़यंत्रों का खुलासा होता जा रहा है। अभी तक इस मामले से जुड़ी कुल चार कारें सामने आई हैं, लेकिन ऐसी संदिग्ध कारों की संख्या बढ़कर 32 हो चुकी है। जिनका प्रयोग 6 दिसम्बर को बाबरी ढांचा ध्वस्त करने के लगभग साढ़े 3 दशक पुरानी घटना का बदला लेने के लिए होना था।

इस पूरे ब्लास्ट की साजिश की डोर तुर्किये में बैठे एक हैंडलर उकासा के हाथ में थी। इसी ने अल-फलाह यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर उमर उन नबी और उसकी टीम को भारत में स्पेक्टैकुलर अटैक्स की ट्रेनिंग और दिशा दी। जांच एजेंसियों का मानना है कि तुर्किये में बैठे एक हैंडलर से उमर नबी लगातार सम्पर्क में था। सुरक्षा सूत्रों के अनुसार उकासा दिल्ली स्थित मॉड्यूल और प्रतिबंधित संगठनों जैश-ए-मोहम्मद और अंसारगजत उल हिंद के हैंडलरों के बीच मुख्य कड़ी के रूप में काम करता था। यह साजिश 2022 की शुरुआत में तुर्की में रची गई थी, जहां उमर और तीन अन्य जो सभी पाकिस्तान समर्थित दो समूहों से जुड़े थे, वहां गए थे। उमर मार्च 2022 में तुर्किये गया था और दो सप्ताह अंकारा में रहा था। एक अधिकारी ने बताया, उनकी बातचीत शुरू में टेलीग्राम पर शुरू हुई थी और बाद में एन्क्रिप्टेड ऐप्स पर ट्रांसफर हो गई।

अभिषेक सूर्येश

उमर का करीबी सहयोगी डॉ. मुजम्मिल (जो अल-फलाह विश्वविद्यालय से भी जुड़ा है) ने इस साल जनवरी में लाल किले की कई बार रेकी की थी। सूत्रों का कहना है कि वे 2026 में गणतंत्र दिवस समारोह पर सम्भावित हमले से पहले वहां की सिक्यूरिटी का पूरा निरीक्षण कर लेना चाहते थे। इस ग्रुप ने 2022 से अब तक भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री जमा कर रखी थी, जिसमें अमोनियम नाइट्रेट और आरडीएक्स के अंश शामिल थे। जांच से यह भी पता चला है कि दिल्ली के अलावा अयोध्या भी उनकी हिट लिस्ट में था।

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने देशभर में फैले जिस आतंकी मॉड्यूल का खुलासा किया उससे ये साफ हुआ है कि देशभर में वाइट कॉलर आतंकियों का नेटवर्क बढ़ा है। ये लोग शिक्षित होते हैं, अलग-अलग पेशे में होते हैं और आम लोगों के बीच रहकर सामान्य जिंदगी जी रहे होते हैं। आतंकियों को सामान्य लोगों से अलग करना मुश्किल हो जाता है, लेकिन ये वाइट कॉलर आतंकी, आतंकवादी संगठनों की बैकबोन होते हैं। हथियार उठाकर किसी हमले या आतंकी वारदात को अंजाम देने वाले आतंकी जहां फ्रंट फेस होते हैं, वहीं ये वाइट कॉलर आतंकवादी बाकी सारे सपोर्ट सिस्टम का हिस्सा होते हैं।

वाइट कॉलर आतंकवादी आतंकियों को लॉजिस्टिक सपोर्ट, जानकारी और संदेश एक जगह से दूसरे जगह पहुंचाते हैं, फंड जुटाते हैं और पूरे आतंकी संगठन को चलाने में सहायता करते हैं। आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद सहित जम्मू-कश्मीर में सक्रिय दूसरे आतंकी संगठनों में सीधे तौर पर शामिल होने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है। इनका रिक्रूटमेंट कम हुआ है। मतलब आतंकियों को ऐसे लोग कम मिले हैं जो सीधे इनके लिए हथियार थामें। सिक्योरिटी एजेंसियों से मिले डेटा के अनुसार इस वर्ष 2 आतंकी रिक्रूट हुए। पिछले साल 6 आतंकी रिक्रूट हुए थे। 2023 में 17, 2022 में 120, 2021 में 150 और 2020 में जम्मू-कश्मीर के 200 युवा आतंकी संगठनों में शामिल हुए थे। सिक्योरिटी एजेंसी के एक अधिकारी ने कहा कि ये रिक्रूटमेंट कम हुआ है, लेकिन ओवर ग्राउंड वर्कर कितने हैं इसका अनुमान लगाना मुश्किल होता है। सिक्योरिटी एजेंसियां मान रही हैं कि आतंकवादी संगठनों ने पेशेवर लोगों में अपना पेनिट्रेशन बढ़ाया है और वाइट कॉलर आतंकियों की बड़ी खेप तैयार की है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी पाकिस्तान की तरफ से आतंकी घुसपैठ का प्रयास जारी रहा। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अब तक एलओसी पार से घुसपैठ की चार कोशिशों को भारतीय सेना ने नाकाम किया और घुसपैठ कर रहे 8 आतंकियों का मार गिराया। 1 सितम्बर को पुंछ सेक्टर में आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की, जिसे नाकाम किया गया और दो आतंकी मारे गए। 28 अगस्त को गुरेज सेक्टर में घुसपैठ का प्रयास कर रहे दो आतंकियों को भारतीय सेना ने मार गिराया। 28 सितम्बर को कुपवाड़ा में घुसपैठ की कोशिश हुई और 2 आतंकी मारे गए। 8 नवम्बर को कुपवाड़ा के केरन सेक्टर में दो आतंकियों का सुरक्षा बलों ने सफाया किया। इस तरह एक महीने में लगातार 8 बार आतंकी हमले की साजिशों को नाकाम करने का काम भारत की सुरक्षा एजेंसियों ने किया है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस के सीक्रेट ऑपरेशन से फरीदाबाद से 350 किलोग्राम आरडीएक्स एवं दो एक-47 राइफल्स समेत भारी मात्रा में गोला-बारूद एवं विस्फोटक फरीदाबाद स्थित अलफलाह यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मुजम्मिल के घर से जब्त किया गया जो कि दिल्ली एनसीआर के भीड़ भरे क्षेत्रों को दहलाने के लिए योजनबद्ध तरीके से एकत्रित किया जा रहा था। इसके अलावा आईएसआईएस मॉड्यूल के दो संदिग्ध आतंकी अदनान खान दिल्ली और दूसरा अदनान खान भोपाल जो कि चार्टड अकाउंट का कोर्स कर रहा था उसे दिल्ली पुलिस ने धर दबोचा। इन्होंने दक्षिणी दिल्ली सहित चार-पांच जगह की रेकी कर ब्लास्ट की तैयारी की थी जिसके सीधे टारगेट लाल किला, आजादपुर सब्जी मंडी, मॉल एवं भीड़भाड़ वाले मार्केट थे।

आतंक के डॉक्टर की जहरीली साजिश गुजरात की एटीएस टीम ने नाकाम कर दी और तीन आतंकियों अहमद मोइनुद्दीन सैयद, सोहेल खान और सुलेमान शेख को गिरफ्तार किया गया जो कि चीन से एमबीबीएस की डिग्री लेकर खड्यझ (इस्लामिक स्टेट खुरासन) का खूंखार आतंकी सहयोगी हैं। जांच एजेंसियों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार इन तीनों आतंकवादियों ने दिल्ली अहमदाबाद और लखनऊ में आरएसएस के मुख्यालय की रेकी करके बड़े हमले का ब्लूप्रिंट तैयार किया हुआ था। फरीदाबाद की धौज गांव में बनी जिस अलफलाह यूनिवर्सिटी से चार आतंकी डॉक्टर निकले हैं वहां 40% डॉक्टर कश्मीरी है।

***

पहले से स्पष्ट था सम्मिलित परिणाम

अवधेश कुमार

बिहार चुनाव परिणाम ने सिद्ध किया है कि राजनीतिक तत्व और शासकीय नीतियों में स्त्री पुरुष समता को केंद्र बनाकर सामाजिक न्याय, विकास, कानून व्यवस्था तथा हिंदुत्व के साथ राष्ट्रीय भाव का समायोजन हो तो धीरे-धीरे बहुसंख्यक जातीय परिधि को तोड़कर आगे आ सकता है।

बिहार के मतदाताओं ने एकपक्षीय जनादेश दिया। यह धारणा पिछले डेढ़ दशकों में ध्वस्त हो चुकी है कि रिकॉर्ड संख्या में मतदान होने का अर्थ सत्ता विरोधी रुझान है। मतदान घटने या बढ़ने से सत्ता के जाने या बने रहने का सामान्यतः कोई सीधा सम्बंध नहीं रहा। बिहार में 66.91% अभूतपूर्व मतदान ने इसे फिर साबित किया है। बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम ने केवल उन लोगों को चौंकाया होगा जो वस्तुस्थिति से दूर कल्पनालोक में थे या भांपते हुए भी परिणाम आने तक सच स्वीकारने को तैयार नहीं थे। कांग्रेस अब राहुल गांधी के नेतृत्व में पराजय वाले परिणामों को स्वीकार करने के लिए तैयार ही नहीं। उन्हें महाराष्ट्र, हरियाणा और कर्नाटक तक में वोट चोरी दिखा और बिहार में भी यही होगा। बिहार की राजनीति की पिछले तीन दशकों के साथ वर्तमान स्थिति समझने वालों के लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक परिणाम है। मुख्य मंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में जद यू भाजपा सरकार ने व्यापक जन समूह के विरुद्ध ऐसा कुछ नहीं किया जिनसे असंतुष्ट होकर उसे सत्ताच्यूत कर दें। तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाला विपक्ष सरकार में रहकर या विरोधी समूह के रूप में जनसमूह में सरकार विरोधी आलोड़न पैदा नहीं किया कि इन्हें सत्ता देने के लिए एकजुट हो जाए। वास्तव में चुनाव के दौरान लोगों से बात करने पर साफ दिखाई देता था कि नीतीश सरकार को लेकर प्रदेश स्तर पर कोई सामूहिक असंतोष है ही नहीं। तीसरी शक्ति के रूप में खड़े होने की कोशिश कर रही जन सुराज को गांव तक लोग अवश्य जानते थे, दल के रुप में जनसुराज के सीधे मतदाता नहीं मिलते थे। कुछ उम्मीदवारों के समर्थन में अवश्य लोग थे। महिलाओं का मत पुरुषों की तुलना में अधिक होना चुनाव परिणाम का बहुत बड़ा संकेतक था।अगर संक्षेप में इन्हीं बिंदुओं को आधार बना दें तो चुनाव परिणाम आसानी से समझ आ जाएगा।

यह परिणाम एक साथ प्रदेश और केंद्र के शासन की निरंतरता, विकास , हिंदुत्व, लैंगिक समानता सहित सामाजिक न्याय के कदमों की सम्मिलित परिणति है। सम्पूर्ण विपक्ष

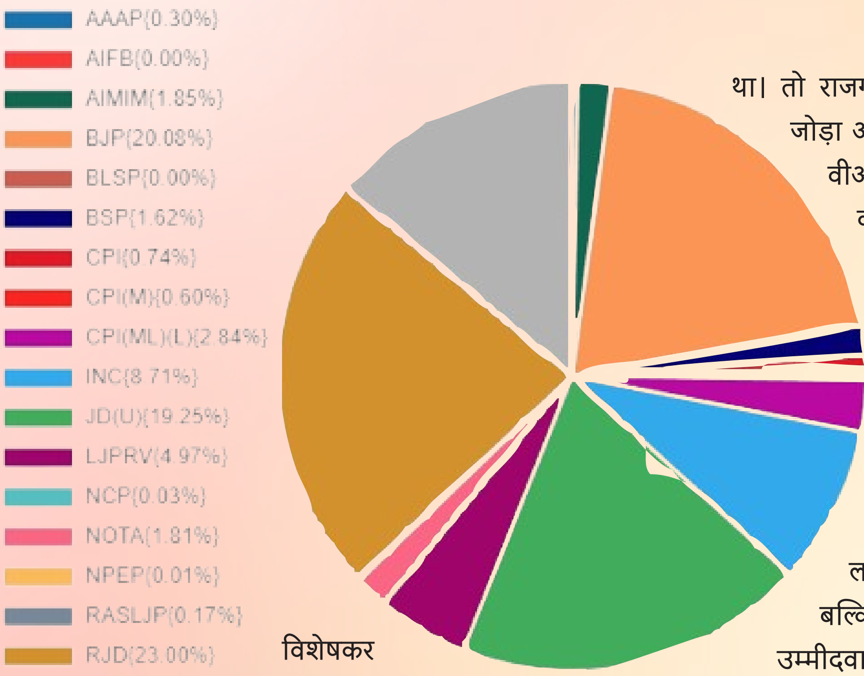

विशेषकर कांग्रेस द्वारा नकारात्मक व्यवहारों के विरुद्ध जन प्रतिक्रिया भी इसमें शामिल है। गठबंधनों वाले चुनावी संघर्ष में प्रदर्शन इस पर निर्भर करता है कि आप एकजुट होकर एक स्वर में बोलते हुए किस तरह मुद्दों, वक्तव्यों और रणनीति पर एकरूपता प्रदर्शित करते हैं। केंद्र में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य में मुख्य मंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन पहले दिन से एकजुट दिखाई दिया। थोड़े बहुत मतभेद होते हुए भी इन्होंने सीटों का बंटवारा कर सार्वजनिक घोषणा कर दी। विपक्षी गठबंधन जिसे महागठबंधन कहा गया था उसकी कोई बैठक सार्वजनिक रूप से होती नहीं दिखी। सभी ने अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए। ऐसा संदेश निकला कि केवल भाजपा को हराने के नाम पर साथ हैं अन्यथा उनके बीच एकजुटता नहीं है। तेजस्वी यादव को नेता घोषित करने में भी काफी देरी हुई क्योंकि कांग्रेस इसे स्वीकारने को तैयार नहीं थी। तेजस्वी के नेतृत्व की घोषणा के समय राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे ही नहीं प्रदेश अध्यक्ष तक वहां उपस्थित नहीं थे। अशोक गहलोत और पवन खेड़ा की उपस्थिति में घोषणा हुई । दूसरी ओर भाजपा ने लगातार घोषणा किया कि हम नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहे हैं।

विपक्षी गठबंधन को पिछले चुनाव में चिराग पासवान के लोजपा आर के विद्रोही हो जाने का लाभ मिला था। अगर लोजपा 137 सीटों पर उम्मीदवार खड़ा कर भी राजद कांग्रेस को सत्ता तक नहीं पहुंचा सकी और इस बार वह राजग में है। उपेंद्र कुशवाहा का रालोमो पिछली बार अलग गठबंधन में था। तो राजग ने दो सामाजिक आधारों वाले नेता को जोड़ा और दूसरी ओर केवल एक मुकेश साहनी की वीआईपी थी। मुकेश सहनी संपूर्ण सहनी समाज का प्रतिनिधित्व कर लेंगे शायद यही सोचकर उन्हें उपमुख्यमंत्री का उम्मीदवार बनाया गया। परिणाम बताते हैं कि ऐसा हुआ नहीं। कांग्रेस की पूरी रणनीति वोट चोरी तथा चुनाव आयोग के विरुद्ध अभियानों तक सीमित रहा। बिहार में कहीं श ऐसे लोग नहीं निकले जिन्होंने जानबूझकर मतदाता सूची से नाम काटने का आरोप लगाया इसलिए जमीन पर यह मुद्दा नहीं था बल्कि इसके विपरीत प्रतिक्रिया थी। कांग्रेस उम्मीदवारों तक ने इसे मुद्दा नहीं बनाया। जो है नहीं उसे आप प्रमुख मुद्दा बनाकर चुनाव अभियान चलाएंगे तो परिणाम क्या आएगा?

महिलाएं ज्यादा संख्या में किनके लिए वोट डालने निकली थीं? महिलाओं की भागीदारी 71.6 प्रतिशत रही। कुल 2.51 करोड़ महिलाओं ने मत डाला, जबकि पुरुष मतदाता 2.47 करोड़ रहे। महिलाओं का मत पुरुषों से 4.34 लाख अधिक था। 2020 में 2.08 करोड़ महिलाओं ने मतदान किया था। इसकी तुलना में महिलाओं का मत 43 लाख अधिक रहा। यह यूं ही नहीं हुआ श। नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार ने आरम्भिक दिनों से महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अभूतपूर्व कार्य किया। बच्चियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहन के उद्देश्य से साइकिलें , पुस्तकें ,वस्त्र, स्कॉलरशिप दिए गए। स्थानीय शासन में उन्हें 33% आरक्षण मिला और बाद में सरकारी नौकरियों में भी। केंद्र ने प्रधानमंत्री आवास योजना से लेकर कई कल्याणकारी कार्यक्रमों में महिलाओं को प्रमुखता दी। इन सबसे बिहार की महिलाओं का मनोविज्ञान बदला हुआ है। जिन बच्चियों को 2005 -10 में पढ़ाई की सुविधा मिली अगर वह 15 से 20 वर्ष की थीं तो आज 35 से 40 वर्ष की हो चुकी हैं और उनकी दूसरी पीढ़ी को लाभ मिल रहा है। जीविका दीदी से लेकर छोटे-छोटे रोजगार के लिए 10 हजार रुपए खाते में जाना इन्हीं सबका अगला कदम था। इनकी आप जीतनी आलोचना करिए लेकिन महिलाओं के अंदर घर में रहकर छोटे-छोटे काम कर थोड़े धन उपार्जन की प्रवृत्ति गांव में देखी जा सकती है। यह राजग का ऐसा वोट बैंक है जिसे तोड़ना आसान नहीं।

***

संकट

अवैध घुसपैठ की पोल खोल

विप्लव विकास

वोट केवल मानवाधिकार या सामाजिक कल्याण का प्रतीक नहीं बल्कि चुनावी मशीनरी का हिस्सा बन जाए। इसीलिए समय की मांग है कि प्रशासन, न्यायपालिका और स्वतंत्र मीडिया मिलकर इस प्रक्रिया की निगरानी करें ताकि लोकतंत्र की जड़ें सुरक्षित रहें।

पश्चिम बंगाल में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं आज गहरे संकट में दिख रही हैं। जब किसी राज्य में वोटर-सूची, पहचान-पत्र, राशन-कार्ड जैसे साधारण सरकारी कागजात एक राजनीतिक मशीन बना दिए जाएं, तब यह सिर्फ प्रशासनिक अक्षमता नहीं बल्कि जनसांख्यिकीय इंजीनियरिंग की दिशा में एक मूलभूत बदलाव है।

कोर्ट के उच्च स्तर पर यह बात सामने आई है कि अवैध बांग्लादेशी नागरिकों के पास आधार, वोटर कार्ड और अन्य पहचानपत्र हैं और कुछ मामलों में उन्होंने टैक्स भी दिया है। कागजात बनवाने के लिए बांग्लादेशी अनुप्रवेशकारियों ने 10-10 हजार रुपए तक घुस दिए हैं। नैतिक रूप से विचारणीय विषय है कि उनके पास ये रूपए कहां से आए? निश्चित रूप से उन्होंने यहां लेन-देन किया है, अपना श्रम हो या बुद्धिबल और समय निवेश कर ये रूपए अर्जित किए हैं अथवा सम्भव है किसी तंत्र ने इन रूपयों की व्यवस्था की है। इनके लिए केवल रूपए ही नहीं एक घर के पते की व्यवस्था और सहयोगी आवश्यक कागजातों की व्यवस्था भी की गई है। तभी तो ये घुसपैठिए मतदाता प्रमाणपत्र सहित आधार कार्ड, पैन कार्ड और बैंक खाता खुलवा पाए। इसके पीछे तृणमूल कांग्रेस या वामपंथी दलों के क्षुद्र राजनैतिक लाभ के उद्देश्य को समझना कोई अंतरिक्ष विज्ञान की तरह जटिल नहीं है, पर राज्य की सुरक्षा और संस्कृति पर इसके प्रभाव को खुले मन-मस्तिष्क से विचार करना आवश्यक है।

घुसपैठियों की निष्ठा भारत में नहीं है। न ही पश्चिम बंगाल के नागरिकों की संस्कृति में है। जैसे तृणमूल उनको अपने राजनीतिक लाभ के लिए संरक्षण दे रही है, वैसे ही वे भी अपने वृहत उद्देश्य की पूर्ति हेतु तृणमूल और वामपंथियों को जहां जिसको वोट देना आवश्यक है, वोट दे रहे हैं। आज सरकार के अनेक संस्थानों में इनकी घुसपैठ हो चुकी है। वहीं घरों में सफाईकर्मी से लेकर खाना बनाने तक के काम में भी घुसपैठियों की पहुंच बन गई है।

एसआईआर की प्रक्रिया शुरू होते ही कोलकाता और उसके आसपास के क्षेत्रों में घरेलू काम करने वाली 'मासी' गायब हो गई। कहां गए सब? सियालदह और हावड़ा स्टेशन पर बेतहासा भागती भीड़ इस प्रश्न का उत्तर दे रही है। भारत-बांग्लादेश सीमा पर इनका हुजूम उमड़ा है। कुछ लोग सम्भव है उन्हीं रास्तों से बांग्लादेश भाग गए हों जैसे आए थे। कुछ लोग अन्यान्य राज्यों में जाकर छिप गए। कोलकाता में कई घरों से ये जानकारी मिली कि जो घरेलू सहायिका थी उसने अपनी जगह दूसरी महिला को काम पर भेजा है। जब यह प्रक्रिया पूरी हो जाएगी तब वो आकर दुबारा काम करेगी। तब तक वो कहां है? मालिक को पता नहीं, यह विडम्बना है। आपको जो भारत का नागरिक नहीं है उस घुसपैठिए को काम नहीं देना चाहिए। ये काम का अवसर एक भारतीय का अधिकार है। घुसपैठ रोजगार भी खा रहा है और हमारी सुरक्षा से भी हम समझौता कर रहे हैं। ध्यान रहे जो भारतीय नहीं उससे न तो सरकार को न तो सामान्य नागरिकों को

कोई सामान्य भारतीय जैसा अर्थ व्यवहार या सांविधानिक अधिकारों का लाभ व्यवहार करना चाहिए।

अब एसआईआर तो मतदाता सूची स्वच्छता का विषय है। वोट केवल मतदाता सूची में नाम भरने का मामला नहीं, यह इसलिए है कि लोकतंत्र में वैध नागरिक ही वोट देते हैं और शासन चुनते हैं। यदि गैर-नागरिकों को वोट देने का अवसर मिल रहा हो तो यह संविधान-नियंत्रित प्रक्रिया को खोखला कर देता है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सामाजिक-सामुदायिक पहलुओं से जोड़कर देखना होगा क्योंकि वोट बैंक के लिए पहचानपत्रों का दुरुपयोग हो रहा है।

गुलशन कॉलोनी एवं न्यूटाउन का दृश्य

कोलकाता के गुलशन कॉलोनी व न्यूटाउन क्षेत्र में जब Special Intensive Revision (SIR) प्रक्रिया शुरू हुई तो वहां बड़ी संख्या में लोग भागने लगे। विशेष रूप से Newtown की स्लम-बस्तियों में रहने वाले अनेक बांग्लादेशी नागरिक डर के कारण अपने ठिकानों से हट गए हैं। यह तथ्य स्थानीय स्रोतों में सामने आया है कि SIR की शुरूआत ने उनके लिए खतरे का संकेत उजागर किया।

गुलशन कॉलोनी में इस तरह का आंकड़ा मिलता है कि लगभग 2 लाख के निवासियों में से केवल 20-25 हजार को ही वैध मतदाता पाया गया। इस हिसाब से यहां लगभग 90 % लोगों की पहचान संदिग्ध है। ऐसे डेटा से प्रतीत होता है कि यह केवल निवास का प्रश्न नहीं बल्कि वोटर व पहचान का प्रश्न भी बन गया है।

केंद्र सरकार की भूमिका और आगे की चुनौतियां

यहां विशेष रूप से यह मांग उठती है कि Election Commission of India तथा Border Security Force (बीएसएफ) को इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए ताकि ड्खठ प्रक्रिया के बाद भी इन क्षेत्रों में गैर-नागरिकों का फिर से आना-बसना न हो सके। बीएसएफ ने उत्तरी 24 परगना में हिरासत में लिए गए लगभग 48 बांग्लादेशी नागरिकों का मामला सामने रखा है, जो कह रहे हैं कि वे SIR के डर से भागने को मजबूर हुए थे।

केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि SIR पूरी तरह से लागू हो, बाद में पुनःवापसी की छूट न मिले। सख्त निगरानी-तंत्रों, पहचान-सत्यापन प्रणाली और नागरिकता-नोटिफिकेशन की पारदर्शी प्रक्रिया इसे सम्भव बना सकती है। पश्चिम बंगाल में यह मामला केवल एक क्षेत्रीय समस्या नहीं बल्कि यह लोकतंत्र, पहचान, नागरिकता और वोट बैंक राजनीति के संगम का प्रश्न है। ***

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

राष्ट्रगीत वंदेमातरम् के आधे हिस्से को नेहरू सरकार ने हटा दिया, आखिर इसके पीछे की उनकी मंशा क्या थी? ये प्रश्न आज भी लोगों के मन में कौंधते हैं कि राष्ट्रगीत का अपमान क्यों किया गया?

राष्ट्र चेतना का गीत वंदेमातरम्

वंदेमातरम् अर्थात् भारत माता का ऐसे लौकिक और अलौकिक स्वरुप की प्रार्थना जो मनोमस्तिष्क में अखंड भारत की जीवंत झांकी प्रस्तुत करता है। वंदेमातरम् में प्रकृति स्वरूपा के साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और भौगोलिक चेतना का दृश्यमय चित्रण है। जो वंदेमातरम् राष्ट्र की आत्म चेतना की शक्ति का प्राकट्य मंत्र है। जो जन-जन को भारत माता के प्रति असीम श्रद्धा और भक्ति के भाव से पोषित करता है। जागृति का शंखनाद करता है।

राष्ट्रगीत वंदेमातरम् जिसकी रचना अक्षय नवमी की तिथि को बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 7 नवम्बर सन् 1875 में की थी। 7 नवम्बर 2025 को वंदेमातरम् की रचना के 150 वर्ष पूरे हो गए।

ये वही वंदेमातरम् है जिसने हमारी स्वातंत्र्य चेतना की अमर धुन को झंकृत किया। यदि आप शिशु मंदिर में पढ़े हैं तो आपने हमेशा पूरा वंदेमातरम् ही गाया होगा। अधिकांश आपने देखा होगा कि ठब्ड और संघ विचार से प्रेरित सभी संगठनों के विविध कार्यक्रमों में वंदेमातरम् का पूरा गायन होता है, लेकिन वंदेमातरम् और राष्ट्र की चेतना को नेपथ्य में करने के कृत्यों की भी श्रृंखला है, जो हमारी अंतश्चेतना को झकझोर कर रख देती है।

सोचिए! वंदेमातरम् गीत जो स्वातंत्र्य आंदोलन की आत्मा बना। जिसने शक्ति का संचार किया। क्रूर अंग्रेज जिस वंदे मातरम् को लोगों के हृदय से नहीं हटा पाए। अंग्रेजों के वंदेमातरम् पर लगाए गए अनेक प्रतिबंधों को हमारे क्रांतिकारियों ने, हमारे पूर्वजों ने चुनौती दी। अपने प्राण त्यागे, लेकिन वंदेमातरम् गाना नहीं छोड़ा।

कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

जो वंदेमातरम् की संजीवनी के तौर पर क्रांति का वाहक बना, लेकिन स्वाधीन भारत में 1950 में देश के आधिकारिक राष्ट्रीय गीत में वन्देमातरम् का पूरा स्वरूप नहीं रखा गया। कोटि-कोटि कंठों से गाए जाने वाले वंदेमातरम् को दबा दिया गया, किंतु ये देश का दुर्भाग्य कहिए कि उस वंदेमातरम् गीत के आधे हिस्से को स्वतंत्र भारत की नेहरू सरकार ने हटा दिया। ऐसे में प्रश्न उठते हैं कि आखिर वंदेमातरम् के अधिकांशतः भाग को राष्ट्रगीत से क्यों हटा दिया गया? लोगों के मन में हमेशा यही प्रश्न कौंधते हैं कि स्वतंत्रता के प्रतीकों और प्रेरणा का ये अपमान क्यों किया गया? वर्तमान में जो लोग माओ की रेड बुक की तरह संविधान की प्रतियां लहराते रहते हैं। आपातकाल की क्रूरता से लेकर हमेशा संविधान का अपमान करते रहते हैं। क्या ये वही लोग नहीं हैं जिन्होंने वंदेमातरम् को हटाने का पाप किया। ये वही लोग हैं जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम को केवल एक परिवार और गिने-चुने चेहरों का संग्राम बताया।

जनजातीय समाज से लेकर असंख्य बलिदानियों की इतिहास से उपेक्षा की। दूजी ओर वो विचार और संगठन हैं। जो भारत की राष्ट्रीय स्वाभिमान, संस्कृति, मान बिंदुओं और आदर्शों को जीवन में उतारते हैं। राष्ट्रीयता के मूल्यों के साथ समाज जीवन में कार्य करते हैं। अब आप तय कीजिए कि स्वतंत्रता आंदोलन और क्रांतिकारियों के प्रति कौन वास्तव में सम्मान का भाव रखता है। कौन हमारे प्रतीकों, आदर्शों का वास्तविक संवाहक और अनुकरणकर्ता है? और कौन राष्ट्र संस्कृति के विरोध में वर्षों से जुटा हुआ है।

***

यथार्थ

ममदानी की जीत केवल एक व्यक्ति की राजनीतिक सफलता नहीं बल्कि भारत-अमेरिका सम्बंधों के बदलते समाजशास्त्रीय परिदृश्य की एक झलक है। यदि इस वैचारिक टकराव को समय रहते संतुलित न किया गया तो यह साझेदारी के भावनात्मक और सांस्कृतिक पक्ष पर प्रभाव डाल सकती है।

डॉ. अभिषेक श्रीवास्तव

ममदानी की जीत का अर्थ

न्यूयॉर्क के नव-निर्वाचित मेयर जोहरन ममदानी की जीत अमेरिका के पारम्परिक डेमोक्रेटिक वर्सेज प्रोग्रेसिव स्पेक्ट्रम पर एक गहन चर्चा की शुरुआत है। ममदानी ने स्वयं को एक प्रगतिशील तथा डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट के रूप में प्रस्तुत किया, किंतु अमेरिका के डेमोक्रेटिक पार्टी के भीतर और राष्ट्रीय स्तर पर उनकी स्वीकार्यता कम है। कुछ पारम्परिक डेमोक्रैट्स और राष्ट्रीय नेताओं ने उनकी योजनाओं को अव्यावहारिक या पार्टी की मध्यम-मार्गी नीतियों से असंगत बताया। ममदानी के चुनाव के बाद ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और संघीय स्तर पर टकराव उभरकर सामने आए। ट्रम्प ने सार्वजनिक मंचों पर ममदानी को चरमपंथी कम्युनिस्ट कहा और संकेत दिया कि वह संघीय निधियों या सहयोग को सीमित कर सकते हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प की ममदानी को यह चेतावनी अमेरिका के अंदर शहर-फेडरल सम्बंधों में तनाव उत्पन्न कर सकती है। ऐसे टकराव से न्यूयार्क शहर की वित्तीय स्थिरता, फेडरल ग्रांट्स तथा आपातकालीन संसाधनों पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है।

हालांकि एक मेयर के चुनाव से अमेरिका की विदेश नीति तथा उसके द्विपक्षीय सम्बंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, परंतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ममदानी की पृष्ठभूमि और कुछ विदेश-नीतिगत वक्तव्य विशेषकर मध्य-पूर्व या इजरायल-फिलिस्तीन विवाद जैसे संवेदनशील मामलों पर, भारत विशेषकर मोदी सरकार की नीतियों पर विदेशी सरकारें और समुदाय उनके रुख को लेकर सतर्क हैं, जबकि वैश्विक वामपंथी हलकों में उनके निर्वाचन तथा विचारों को स्वागत मिला है। यह दिखाता है कि अब शहरों के चुनावों के वैश्विक निहितार्थ भी अधिक स्पष्ट और तेज हो गए हैं।

भारत-अमेरिका सम्बंधों पर असर

जोहरन ममदानी की भारत और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति विचार भी सर्वविदित है, वह लम्बे समय से भारत और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के मुखर आलोचक रहे हैं। उनके वक्तव्यों में न केवल भारतीय लोकतंत्र की आलोचना झलकती है बल्कि एक ऐसी वैचारिक दृष्टि भी दिखाई देती है जो अमेरिकी वामपंथी राजनीति के प्रभाव में भारत की छवि को वैश्विक मंचों पर चुनौती देती है।

भारत में ममदानी के वक्तव्यों को पर्यवेक्षक ऐसा मानते हैं कि उनके वक्तव्य में न केवल भारत की आलोचना है बल्कि भारत के विरुद्ध एक वैचारिक अभियान का हिस्सा भी है जो मानवाधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता जैसे संवेदनशील मुद्दों को एकतरफा रूप में प्रस्तुत कर भारत को नैतिक रूप से कटघरे में खड़ा करता है। यह वही दृष्टिकोण है जो अमेरिकी वामपंथी समूहों में प्रचलित है, जहां विकासशील लोकतंत्रों की जटिलताओं को समझने की जगह नैतिक उपदेशों का स्वर प्रमुख रहता है।

देखा जाए तो अमेरिकी लोकतंत्र में स्थानीय नेताओं और नगर प्रशासन की अपनी स्वायत्तता होती है। यदि ऐसे संस्थानों में भारत विरोधी भावनाओं को संस्थागत मान्यता मिलने लगे तो यह कई स्तरों पर प्रभाव डाल सकती है। सबसे पहले, इससे अमेरिकी जनमत में भारत की छवि पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। जब स्थानीय मीडिया और राजनीतिक समूह ममदानी जैसे नेताओं की टिप्पणियों को मानवाधिकार के नाम पर प्रचारित करते हैं तो यह वैश्विक विमर्श में भारत के प्रति संशय और अविश्वास को बढ़ाता है। यह प्रवृत्ति भारत-अमेरिका सम्बंधों के लिए चिंताजनक संकेत देती है। दोनों देशों के बीच सम्बंध केवल कूटनीतिक या सामरिक साझेदारी तक सीमित नहीं हैं बल्कि यह जनता से जनता के रिश्तों, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक सहयोग पर भी आधारित हैं। ऐसे में जब किसी अमेरिकी शहर या राज्य स्तर पर भारत-विरोधी नैरेटिव को वैधता मिलने लगे तो इससे सम्बंधों की आधारभूत समझ और आपसी विश्वास पर गहरा असर पड़ सकता है। यदि भारत-विरोधी बयानबाजी सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनती है तो यह भारत के प्रति अमेरिकी जनमत को प्रभावित कर सकती है। इसका सीधा प्रभाव अमेरिकी नीति निर्माण और सामाजिक दृष्टिकोण पर भी पड़ सकता है।

भारतीय प्रवासियों ने अमेरिकी लोकतंत्र के विभिन्न ध्रुवों पर अपनी जगह बनाई है, पर जहां एक ओर कुछ भारतीय मूल के राजनेता भारत के साथ सहयोग की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर ममदानी जैसे नेता भारत की नीतियों की खुली आलोचना कर रहे हैं। ममदानी की राजनीतिक सफलता का महत्व केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित नहीं है। यह अमेरिकी राजनीति के उस उभरते विमर्श का प्रतीक है जिसमें दक्षिण एशिया से आए प्रवासी नेता अपने मूल देशों पर टिप्पणी करने से नहीं हिचकते, किंतु जब ये टिप्पणियां किसी देश की सम्प्रभुता और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर प्रश्नचिह्न लगाने लगें तब यह केवल राजनीतिक अभिव्यक्ति नहीं रह जाती बल्कि दूसरे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के समान हो जाती है।

***

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

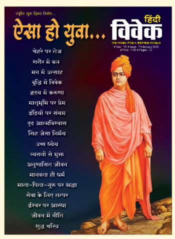

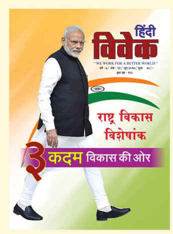

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

धीप्रज्ञ द्विवेदी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 'पंच परिवर्तन' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से स्वदेशी सोच, समाज लाभ, पर्यावरण सरंक्षण, कुटुम्ब प्रबोधन और नागरिक कर्तव्य को आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में प्राथमिकता दी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनरुथान के लिए प्रतिबद्ध है।

भारतीय ज्ञान परम्परा भारत की प्राचीन ज्ञान और शिक्षा की एक विविध प्रणाली है, जिसमें विज्ञान, कला, दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और व्याकरण जैसे कई क्षेत्र शामिल हैं। यह वेदों, उपनिषदों और पुराणों से प्रारम्भ होकर संतों और विभिन्न शास्त्रों के माध्यम से विकसित हुई है। यह भारत की हजारों वर्षों में विकसित हुई बहुआयामी बौद्धिक विरासत है। इस परम्परा का विकास वेद, उपनिषद, पुराण, धर्मशास्त्र तथा संत साहित्य के माध्यम से हुआ और इसका उद्देश्य केवल बौद्धिक उन्नयन ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और आत्मिक जागरण रहा है।

हम कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल शिक्षा की प्रणाली नहीं बल्कि जीवन-दर्शन पर आधारित एक व्यापक ज्ञान संहिता है। इसकी जड़ें वेद, उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, खगोल विज्ञान, गणित, नाट्यशास्त्र और कला-विज्ञान तक फैली हैं। यह परम्परा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित है। इसका लक्ष्य ज्ञान को केवल रोजगार का साधन नहीं बल्कि आत्मबोध, सामाजिक समरसता और विश्वकल्याण का माध्यम बनाना है। इस प्राचीन सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का संरक्षण और पुनर्जीवन आवश्यक है। समकालीन समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उसके साथ जुडें शिक्षा संगठनों ने इस परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए संगठित प्रयास किए हैं और इन प्रयासों के परिणाम भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में भी परिलक्षित हो रही हैं। आज से कुछ वर्ष पहले तक अकादमिया में भारतीय ज्ञान परम्परा पर चर्चा होना एक प्रकार से असम्भव था और इसे पिछड़ेपन

का प्रतीक माना जाता था। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं अन्य समान विचार वाले संगठनों के लगातार समन्वित प्रयासों से सम्भव हो पाया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण और योगदान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय संस्कृति और मूल्यों के पुनरुद्धार का एक वैचारिक आंदोलन है। संघ का मूल उद्देश्य है- राष्ट्र जीवन का पुनर्निर्माण भारतीय मूल्यों की नींव पर। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा इसके वैचारिक केंद्र में हैं।

वैचारिक दृष्टिकोण: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं बल्कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक चेतना का जागरण है। इसके लिए स्व यानी आत्मनिर्भर भारत और पंचमुखी विकास- शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आत्मिक, चारित्रिक की संकल्पना पर बल दिया जाता है।

इसके लिए विविध शैक्षिक संस्थाएं स्थापित की गईं और पाठ्यक्रम निर्धारित किए गए। 'विद्या भारती', 'भारतीय शिक्षण मंडल' आदि की स्थापना कर भारतीय परम्पराओं को पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है। इन पाठ्यक्रमों में योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान, सांस्कृतिक मूल्यों और लोक साहित्य को स्थान दिया गया।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020): नीति निर्माताओं पर प्रभाव डालकर भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System, IKS) की साझेदारी को बढ़ाया गया है। अब शोध, प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम में भारतीय दृष्टिकोण प्रमुख हो रहा है।

सांस्कृतिक पुनरुद्धार: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थानीय भाषाओं, परम्पराओं, धार्मिक अनुष्ठानों और सामुदायिक संगठनों के माध्यम से सांस्कृतिक एकता व राष्ट्रीय गौरव का प्रचार कर रहा है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेवा भारती इंटरनेशनल तथा 'अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्' जैसी संस्थाओं के माध्यम से यह कार्य किया जा रहा है।

पंचमुखी विकास की अवधारणा एवं स्व बोध: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शैक्षिक दृष्टिकोण का विस्तार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिक्षा-विंग विशेषकर विद्या भारती, भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में 'पंचमुखी विकास' की अवधारणा को प्रमुखता देता है। यह मॉडल सम्पूर्ण व्यक्ति-विकास का लक्ष्य रखता है, जो पश्चिमी-आधुनिक शिक्षा के केवल उपयोगितावादी दृष्टिकोण से अलग है।

पंचमुखी विकास की संकल्पना

'पंचमुखी विकास' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्वीकृत एक समग्र शैक्षिक दृष्टिकोण जो अपने मूल स्वरूप में भारतीय ज्ञान परम्परा से ही मिली है, जिसमें पांच प्रमुख आयाम शामिल हैं।

शारीरिक विकास: स्वास्थ्य, शक्ति और अनुशासन का निर्माण। योग, प्राणायाम तथा पारम्परिक आर्य व्यायाम इसका आधार हैं। विद्यार्थी में ऊर्जा, संयम और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने पर बल।

बौद्धिक विकास: आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता का विकास, परंतु भारतीय सांस्कृतिक नींव पर आधारित। 'ज्ञान का स्वदेशीकरण' यानी विचारों में आत्मनिर्भरता और संस्कृति-सम्मिलन।

सामाजिक विकास: समाज के प्रति दायित्व, सेवा-भाव और सामुदायिक एकता। 'सेवा' जैसे कार्यक्रम छात्रों में समाजोत्थान, सहयोग व सामाजिक समरसता के भाव उत्पन्न करते हैं।

आत्मिक विकास: आंतरिक शांति, नैतिकता और अपने वास्तविक स्वरूप की अनुभूति। यह स्व-बोध और चरित्र निर्माण का आधार है-राष्ट्रीय, धार्मिक और मानवीय मूल्यों के साथ।

चारित्रिक विकास: सत्यनिष्ठा, साहस, ईमानदारी, जिम्मेदारी और दृढ़ता जैसे गुणों का निर्माण- यही शिक्षा का परम लक्ष्य माना जाता है। विद्यार्थी में सतत नैतिकता और नेतृत्व क्षमता विकसित करना।

केस स्टडी: विद्या विकास परियोजना

विद्या विकास परियोजना उत्तर कर्नाटक के पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा एवं संस्कृति से वंचित बच्चों के लिए सेवा भारती ट्रस्ट द्वारा संचालित किया गया है। इसमें बच्चों को विद्यालय योग्य बनाना, उनकी पढ़ाई के साथ स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का प्रशिक्षण दिया जाता है, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों का चारित्रिक निर्माण।

यह परियोजना न केवल शैक्षिक विकास पर बल देती है बल्कि उनकी छिपी प्रतिभाओं और कौशलों की पहचान कर उन्हें निखारने का काम भी करती है, साथ ही ड्रॉपआउट कम करना और समुदाय के साथ जुड़ाव स्थापित करने की भी गतिविधियां चलाती है। इसके अतिरिक्त शिक्षकों के प्रशिक्षण और महिला सशक्तिकरण पर भी बल दिया जाता है।

***

हिंदी विवेक

We Work For A Better World

हिंदी विवेक मासिक पत्रिका द्वारा प्रकाशित

अंक मूल्य रु. 50/-

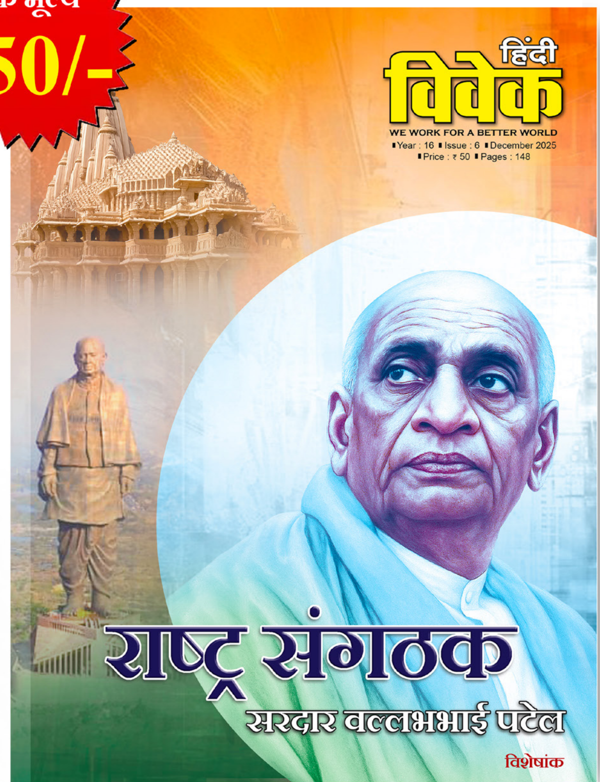

राष्ट्र संगठक

सरदार वल्लभभाई पटेल

विशेषांक

Website:- www.hindivivek.org

Email:- contact@hindivivek.org
hindivivekvargani@gmail.com

-: संपर्क :-

+91 9594991884, 9004125033

QR कोड स्कैन कर, विशेषांक खरीदें.

तीन तलाक के दर्द को बयां करती फिल्म

यह फिल्म महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों विशेषकर तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं के हक की लड़ाई को रेखांकित करती है। इसमें महिलाओं के हक और न्याय को दर्शाया गया है। कानून तो बना, लेकिन महिलाओं को कितना न्याय मिल रहा है, इस व्यवस्था से पर्दा उठाती है यह फिल्म।

ये फिल्म जिसे दस बार देखें तो भी जी न भरे। इसमें शाजिया बानो का किरदार निभाती यामी के पीछे उनकी ऑन स्क्रीन सास हैं और सामने शौहर बने इमरान हाश्मी उर्फ अब्बास खान। अब्बास दूसरी शादी कर चुके हैं, पर अचानक हुए इस निकाह की सफाई सासू मां दे रही हैं। यामी की बेजोड़ एक्टिंग है और रेशु नाथ के लिखे शानदार डायलॉग्स हैं। यामी गौतम ने फिर एक ऐसी बेजोड़ परफॉरमेंस दी है कि नेशनल अवार्ड झोली में आ सकता है। इमरान हाश्मी गजब हैंडसम लगने के साथ-साथ, डॉयलाग डिलीवरी में भी अपनी छाप छोड़ जाते है। वर्तिका सिंह भी सौतन के रोल में फिट लगी हैं। बहुत ही अच्छी मूवी, एक बार हर किसी को देखनी चाहिए। लेकिन इस मूवी में हमारे देश के राजनेताओं और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का घिनौना सच नहीं दिखाया कि कैसे साजिश करके संसद में कानून बनाया गया और कोर्ट के फैसले को पलटा गया और शाह बानो को कभी न्याय नहीं मिल सका। ये नहीं दिखाया कि कैसे वोट बैंक और कुर्सी का लालच न्याय और इंसानियत को खा जाता है। कांग्रेस पार्टी जो आज कहती है 'अब होगा न्याय' उसी ने अन्याय किया था, आज ये जो अधिकार देने की बातें करते हैं बड़ी-बड़ी अधिकार यात्राएं निकालते हैं 'वोटर अधिकार यात्रा' फलाना ढींमकाना इन्होंने ही अधिकार छीना था। एक और नारा है इनका 'कांग्रेस का हाथ आम आदमी के साथ' गलत कांग्रेस का हाथ कुर्सी के साथ

थोड़ी सी कुर्सी क्या डगमगाई इन्होंने न्यायालय के सही फैसले को पलट दिया और ये करेंगे न्याय ये दिलाएंगे अधिकार। 2-2, 4-4 बीवियां रख कर भारत के कानून और इंसानियत को मुंह चिढ़ाते ये लोग बर्दाश्त के बाहर हैं। यूनिफार्म सिविल कोड तो चाहिए ही चाहिए दूसरी शादी के सम्बंध में अभी एक संशोधन और बाकी है कि बीवी अगर ऐतराज जाहिर नहीं करेगी कोर्ट में तो कानून एक्शन नहीं लेगा और ये लोग दनदनाते फिरेंगे गैर कानूनी शादियां करके भी। इस पर ये संशोधन होना चाहिए कि बीवी ऐतराज जाहिर करे या नहीं दूसरी शादी गैर कानूनी है और कानून तोड़ने की सजा होगी हर हाल में। ये हरकतें समाज को अच्छा संदेश नहीं देतीं और इससे बहुत से लोगों की जिंदगियां बर्बाद हो जाती हैं इसलिए इस पर एक्शन होना चाहिए। किसी भी धर्म संप्रदाय के व्यक्ति को बिना तलाक दूसरी शादी की अनुमति नहीं होनी चाहिए। बल्कि यूनिफार्म सिविल कोड लागू किया जाए और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड खत्म किया जाए, भारत को इसकी आवश्यकता नहीं।

***

जन्मदिवस (19 नवम्बर)

संघ कार्य को समर्पित भाऊराव देवरस

मुरलीधर दत्तात्रेय (भाऊराव) देवरस ने संघ के कामों को उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिलों में फैलाने का काम किया। इन्होंने नौकरी नहीं की और संघ के शाखा विस्तार में ही लगे रहे। उ.प्र. में संघ कार्य को दृढ़ करने के बाद भाऊराव क्रमशः बिहार, बंगाल और पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्र प्रचारक तथा फिर सह सरकार्यवाह बनाए गए।

उ.प्र. में संघ की शाखा सर्वप्रथम काशी में भैयाजी दाणी द्वारा प्रारम्भ की गई थी, पर संघ के काम को हर जिले तक फैलाने का श्रेय मुरलीधर दत्तात्रेय (भाऊराव) देवरस को है। उनका जन्म 19 नवम्बर, 1917 (देवोत्थान एकादशी) को नागपुर के इतवारी मोहल्ले के निवासी एक सरकारी कर्मचारी दत्तात्रेय देवरस के घर में हुआ था। वे पांच भाई थे तथा उनसे दो वर्ष बड़े मधुकर दत्तात्रेय (बालासाहब) देवरस भी संघ के प्रचारक बनकर अनेक दायित्व निभाते हुए संघ के तीसरे पू. सरसंघचालक बने। उन दोनों भाइयों की जोड़ी बाल-भाऊ के नाम से प्रसिद्ध थी। संघ की स्थापना होने पर पहले बाल और फिर 1927-28 में भाऊ भी शाखा जाने लगे। डॉ. हेडगेवार के घर में खूब आना-जाना होने से दोनों संघ और उसके विचारों से एकरूप हो गए। 1937 में भाऊराव ने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। अब डॉ. हेडगेवार ने उन्हें उ.प्र. में जाने को कहा। अतः भाऊराव ने लखनऊ वि.वि. में बी.कॉम तथा एलएलबी में प्रवेश ले लिया। उन दिनों वहां दो वर्ष में डबल पोस्ट डिग्री पाठ्यक्रम की सुविधा थी। भाऊराव ने दोनों विषयों में स्वर्ण पदक प्राप्त किए। लखनऊ में वे संघ के साथ स्वाधीनता आंदोलन में भी सक्रिय रहे। उनके प्रयास से वहां सुभाष चंद्र बोस का एक भव्य कार्यक्रम हुआ था। भाऊराव के घर की स्थिति बहुत सामान्य थी। वे अब आसानी से कहीं भी डिग्री कॉलेज में प्राध्यापक बन सकते थे, पर उन्हें तो उ.प्र. में संघ का काम खड़ा करना था, अतः वे यहीं डट गए। एमएससी के छात्र बापूराव मोघे भी उनके साथ थे। घर वालों ने पैसे भेजना बंद कर दिया था। अतः ट्यूशन पढ़ाकर तथा एक समय भोजन कर वे दोनों शाखा विस्तार में लगे रहे। उन दिनों नागपुर में मार्तंडराव जोग का गुब्बारे बनाने का कारखाना था। भाऊराव ने लखनऊ में गुब्बारे बेचकर कुछ धन का प्रबंध करने का प्रयास किया, पर यह योजना सफल नहीं हुई। 1941 में उन्होंने काशी को अपना केंद्र बना लिया क्योंकि वहां काशी हिंदू वि.वि. में पढ़ने के लिए देशभर से छात्र आते थे। वहां दत्तराज कालिया की हवेली में उन्होंने अपना ठिकाना बनाया। यद्यपि उनका पूरा दिन छात्रावासों में ही बीतता था। उन छात्रों के बल पर क्रमशः उ.प्र. के कई जिलों में शाखाएं खुल गईं। दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, रज्जू भैया जैसे श्रेष्ठ छात्र उन दिनों उनके सम्पर्क में आए, जो फिर संघ और अन्य अनेक कामों में शीर्षस्थ स्थानों पर पहुंचे। उ.प्र. में संघ कार्य करते हुए भाऊराव का ध्यान और भी कई दिशाओं में रहता था। इसी के परिणामस्वरूप 1947 में लखनऊ में 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' की स्थापना हुई। जिसके माध्यम से राष्ट्रधर्म मासिक, पांचजन्य साप्ताहिक तथा तरुण भारत जैसे दैनिक पत्र प्रारम्भ हुए। आज 'विद्या भारती' के नाम से देशभर में लगभग एक लाख विद्यालयों का जो संजाल है, उसकी नींव 1952 में गोरखपुर में 'सरस्वती शिशु मंदिर' के माध्यम से रखी गई थी। उ.प्र. में संघ कार्य को दृढ़ करने के बाद भाऊराव क्रमशः बिहार, बंगाल और पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्र प्रचारक तथा फिर सह सरकार्यवाह बनाए गए। इन दायित्वों पर रहते हुए उन्होंने पूरे देश में प्रवास किया, फिर उनका केंद्र दिल्ली हो गया। यहां रहते हुए वे विद्या भारती तथा भारतीय जनता पार्टी जैसे कामों की देखरेख करते रहे। व्यक्ति पहचानने की अद्भुत क्षमता के कारण उन्होंने जिस कार्यकर्ता को जिस काम में लगाया, वह उस क्षेत्र में यशस्वी सिद्ध हुआ। धीरे-धीरे उनका शरीर थकने लगा। फिर भी उनकी मानसिक जागरूकता बनी रही। 13 मई, 1992 को दिल्ली में ही उनका देहांत हुआ। आज संघ और स्वयंसेवकों द्वारा संचालित अनेक कार्यों में उ.प्र. के कार्यकर्ता प्रमुख स्थानों पर हैं। इसका श्रेय निःसंदेह भाऊराव और उनकी अविश्रांत साधना को ही है। ***

विजय कुमार

एशिया कप स्टेज 3 में तेजल का चयन

एशिया कप स्टेज 3 जेद्दा, सऊदी अरब कालिका स्टील प्रायोजन के अंतर्गत तेजल का चयन भारत के लिए हुआ। कालिका स्टील ने हमेशा की तरह उभरते खिलाड़ियों को प्रोत्साहित और समर्थन देकर तेजल के उल्लेखनीय प्रदर्शन का बहुत ही गौरवशाली उत्सव मनाया। तेजल को 9 से 15 दिसम्बर 2025 तक सऊदी अरब के जेद्दा में होने वाले एशिया कप स्टेज 3 में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए पहले नम्बर पर चुना गया है। चयन परीक्षा सोनीपत में हुई थी, जिसमें पूरे भारत से 45 लड़कियां शामिल थीं। तेजल ने पहला स्थान प्राप्त कर भारतीय टीम में अपनी जगह बनाई। अखिल भारतीय अंतर-विश्वविद्यालय तीरंदाजी चैम्पियनशिप 2025 में डॉ. बाबा साहेब मराठवाड़ा विश्वविद्यालय की छात्रा तेजल ने व्यक्तिगत स्वर्णपदक जीता। उन्होंने 351/360 स्कोर करके पदक और मिश्रित टीम में कांस्य पदक जीता। उन्होंने अपने विश्वविद्यालय में पहला व्यक्तिगत पदक जीता।

बेलगाम जिले के नेता, पूर्व सांसद अन्नासाहेब जोल्ले(साहेब) को बेलगाम जिला केंद्रीय बैंक का अध्यक्ष चुने जाने पर उन्हें बधाई व शुभकामनाएं दी गईं।

भाजपा संगठन मंत्री डॉ. उपेंद्र कोठेकर को हिंदी विवेक द्वारा प्रकाशित 'दीपस्तम्भ' ग्रंथ आप्पा पाटील स्वयंसेवक एवं भाजपा जिला उपाध्यक्ष मेळघाट ग्रामीण (अमरावती) ने भेंट किया। इस अवसर पर अमरावती के धारणी शहर के अध्यक्ष विवेक नवलाखे, बिसराम झामरकर आदि उपस्थित थे।

रा. स्व. संघ की चार दिवसीय व्याख्यानमाला

भारतीय विचार मंच द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित संघ की शताब्दी यात्रा–नेतृत्व की दिशा और भूमिका विषयक व्याख्यानमाला के अंतिम दिवस पर सहसरकार्यवाह आलोक कुमारजी ने पंचम पू. सरसंघचालक सदर्शनजी तथा वर्तमान पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवतजी द्वारा किए गए व्यापक सम्पर्क तथा सज्जन शक्ति की सहभागिता पर विस्तार से विचार रखे।

ऋषि मिश्रा और मुकेश जोशी की नियुक्ति

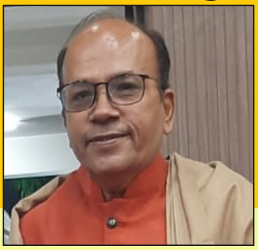

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री रहे ऋषि कुमार मिश्रा को मध्य प्रदेश शासन की मुक्तिबोध सृजन पीठ का निदेशक नियुक्त किया गया है। इसके अलावा प्रसिद्ध व्यंग्यकार मुकेश जोशी को उज्जैन के प्रेमचंद सृजन पीठ के अध्यक्ष का दायित्व मध्य प्रदेश सरकार ने दिया है। विदित हो कि ऋषि कुमार मिश्रा व व्यंग्यकार मुकेश जोशी हिंदी विवेक के लेखक हैं। हिंदी विवेक परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
YOUR DREAM HOME, OUR COMMITMENT.
TJSB Housing Loan
up to ₹ 3 Cr.*
at 8.10% p.a*
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204